कविता - सफल स्त्री

लोग कहते हैं स्त्रियाँ सफल हो रही हैं।

लोग कहां जानते हैं स्त्रियाँ विफल हो रही हैं।

रिश्तों में अंहकार बढ़ रहा है।

आदमी कमज़ोर पड़ रहा है।

प्रेम बिकने लगा है वजूद के लिये

रिश्ते ख़त्म हो रहे हैं ख़ुद के लिये

संस्कार की बात करने बाले

अंहकार पे उतर रहे हैं।

बच्चे ख़तरा महसूस करते हैं।

अपने परिवार के बीच ही

अब प्रेम सराहना न रही बच्चों के लिये

इसके इतर भी है जिंदगी

यह कहां सोच रहा है मनुष्य भी

अपने सपने लेकर खड़ा है

संतानों की जिंदगी दाव पे लिये हुए

अब स्त्रियाँ भी अहंकार में आने लगी

जब दर्जे समान न हुए

स्त्री सत्ता बनाने लगी

अब स्त्री ख़ुद को आजमाने लगी

-शिखा सिंह

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in